शक्ति की पुंज नारी

समस्त मानव जगत स्त्री पुरूष के सुन्दर सामंजस्य से बना है। कर्मणा प्रधान पुरूष परिवार, समाज और देश का विकास करता है तो नारी उसको सुव्यस्थित तथा पल्लवित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। जहाँ पुरूषों में कार्य करने की दक्षता, शारीरिक, मानसिक शक्ति और कर्मठता होती है वहीं नारियों में प्रेम, वात्सल्य, करूणा और सहनशीलता की मूर्ति होती है जिसके सहारे सामाजिक और पारिवारिक जीवन में मानवीय मूल्यों का संचार होता है। ऐसा नहीं है कि नारी केवल इतना तक ही सीमित होती है। भारतीय नारी के अन्दर तो पुरुषों से ज्यादा भी शक्ति होती है जिसको समय प्रति समय महिलाओं ने अपने साहसी कर्त्व्यों से सिद्ध किया है। प्राचीन काल से ही भक्तों, वीरांगनाओं के रूप में नारियों ने ऐसे साहसिक कर्म किये है जिसके पथ पर स्त्री और पुरूष दोनों चलकर अपने दुर्लभ कार्यों को सहजता रूप से करने में सफल होते है। पुरूषों के साथ कंधा से कंधा मिलाकर चलने वाली महिलाओं की गणना आज भी लोग केवल उन्हें उपभोग एवं घरों की चहारदिवारी में समेटकर ही रखने का प्रयास करते हैं। और इसी अवधारणा के कारण आज भी महिलाओं का शोषण जारी है।

कहते है यत्र नार्यस्तु पुज्यते, रमन्ते तत्र देवता। अर्थात जहाँ नारी की पूजा होती है वहाँ देवता रमण करते है। यानि नर से नारायण बनने में भी नारियों का अहम भूमिका है। क्योंकि स्त्री और पुरूष स्वस्थ परिवार और समाज के दो जीवन रूपी पहिये है जिससे दोनो का स्वस्थ होना जरूरी है। नारी के अन्दर इतनी असीम दिव्य शक्ति है जिसके बल पर सीता, दुर्गा, काली, सरस्वती, लक्ष्मी, शीतला, मीरा, सती सावित्री त्याग और वलिदान के क्षेत्र में रानी लक्ष्मीबाई, पन्ना धाय, मदर टेरेसा, दादी प्रकाशमणि, दादी जानकी तथा यदि वर्तमान समय में भी देखें तो आसमान में छलांग लगाने वाली कल्पना चावला, सुनिता विलियम्स, उषा किरन आदि नारियों ने यह कर दिखाया है कि नारी केवल बच्चों की किलकारी और परिवार के भरण पोषण तक ही सीमित नहीं है बल्कि वह एक शक्ति है। आज महिलायें देश को विकसित राष्ट्र बनाने के हर क्षेत्र में पुरूषों के साथ कदम से कदम मिलाकर चल रही है। संसद से लेकर सड़क, गाँव और गलियों तक इनकी सहभागिता है। यदि हम आध्यत्मिक जगत की ओर चलें तो आसुरी समाज को दैवी समाज बनाना महिलाओं के बिना कठिन है। इसके लिए नारी को केवल अपने शक्ति को पहिचानने की आवश्यकता है। प्रेम, वात्सल्य और सहनशीलता की मूर्ति नारी को अपने इस स्वरूप को इमर्ज करना होगा।

यह सत्य है कि बदलते जीवनशैली के कारण भी महिलाओं में फैशनपरस्ती, अश्लीलता के बढ़ते दलदल के कारण महिला जगत शर्मसार हुआ है। फिल्मों में अंग प्रदर्शन ने समाज को गर्त में ढकेलने में आग में घी का काम किया है। इसके लिए भी महिलाओं के साथ-साथ पुरूष काफी हद तक जिम्मेदार है। आदि से अन्त तक बराबर की हिस्सेदार महिलाओं को आज भी केवल एक उपभोग की वस्तु माना जाता है। उसकी इतनी उपलब्धियों के बावजूद आज दहेज प्रथा, दैहिक शोषण, मानसिक प्रताड़ना तथा भ्रूण हत्या जैसी कुरीतियों का जाल बढ़ता जा रहा है। इसके लिए नारी को अपने स्वमान और सम्मान के लिए जागृति होना आवश्यक है। नारी जगत कल्याणी है। नारी के विना मानव जगत का कल्याण नहीं हो सकता है। नारी समाज और परिवार की धूरी है। बिना महिलाओं के सहयोग के कोई भी कार्य पूरा नहीं हो सकता है। इसलिए नारी को उपभोग की वस्तु मानना मिथ्या है। फिर तो यत्र नार्यस्तु पूज्यते तत्र रमन्ते देवता की कहावत झूठी हो

जायेगी। अब नारी को ईश्वरीय मत पर चलकर अपने शक्ति को पहचानकर दुर्गा और काली स्वरूप बनना होगा तथा इस संसार में अश्लीलता और आसुरीयता के आंधी को रोकना होगा और यह केवल महिलायें ही कर सकती है। ऐसी ही एक क्रान्ति छेड़ रखी है ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणि ने जिनके सानिध्य में अपने को शक्ति स्वरूप बनाकर आज उनके सानिध्य में दस हजार ऐसी महिलायें है जो स्व-परिवर्तन से विश्व परिवर्तन के कार्य के लिए दृढ़ संकल्पित है। उनके सामने आने वाला कैसा भी दृष्टि वाला व्यक्ति हो परन्तु उनकी शक्तिशाली रूहानी दृष्टि से आत्म दर्शन करने लगता है। उसके सारे अशुद्ध संकल्पों पर विराम लग जाते है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईष्या, द्वेष को त्याग प्रेम, पवित्रता, दिव्यता, सत्यता को अपनाकर मिशाल कायम कर रही है और केवल भारत ही नहीं बल्कि विश्व के 130 देशों में अध्यात्म का फतह लेकर अग्रसर है। इनके सानिध्य में आने वाले लाखों नर और नारी सिर्फ इनका जीवन देख आध्यात्मिक शक्ति से अपने को परिवर्तन कर दैवी गुणों को धारणा में प्रयासरत है और उनका जीवन सुखमय और शान्तिमय के पथ पर अग्रसर है।

इन महिलाओं की मुखिया 86 वर्षीय दादी प्रकाशमणि है जो इन महिलाओं का कुशलता पूर्वक संचालन कर रही हैं। ऐसे समय में जब कि महिलाओं का शोषण जारी है परन्तु उन्हें अपने अन्दर सुशुप्त शक्तियों को जगाने का महान कार्य रही है और उन्हें अपने अन्दर के दुर्गुणों को मिटाकर दुर्गा, काली और शीतला बनाकर विकारों की आग में जल रही मनुष्यात्माओं को शीतलता प्रदान कर उन्हें दैवी राज्य भाग्य की अधिकारी बना रही है। दादी प्रकाशमणि के महान कार्यों के लिए उन्हें कई राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अवार्ड से सम्मानित किया जा चुका है। 14 वर्ष की आयु से ही स्वयं को सशक्त कर लोगों को पवित्रता और दिव्यता की राह पर प्रेरित करने वाली दादी प्रकाशणि को समाज में उल्लेखनीय कार्यों के लिए मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर द्वारा डाक्टरेट की डिग्री से नवाजा गया है। इन्होंने यह सिद्ध कर दिखाया है कि नारी अबला नहीं सबला है। इनकी दृष्टि मान-अपमान, दुख सुख, अमीर-गरीब और ऊंच-नीच के भेदभाव से परे है एक जगत माता के रूप में इनकी पालना और स्नेह पत्थर जैसे इन्सान को भी पानी बना देती है। आज के नारियों के लिए एक आदर्श है। इनका आध्यात्मिक शिखर इतना उँचा है कि कोई भी मनुष्य इनके सानिध्य में आकर इनके सहारे उस ऊंचाई से समस्त मानव जगत को देख सकता है।

दादी जी के प्रेम और वात्सल्य की सरिता में हर एक नहाकर सारा जहाँ भूल जाता है यह अतिश्योक्ति नहीं बल्कि परमसत्य है। चाहे देश के राष्ट्रपति महामहिम अब्दुल कलाम हो या धर्म गुरू दलाई लामा सभी इनके सानिध्य के अनुभवी है। नारी जगत को अब आधुनिक जीवन शैली पर नियंत्रण रखते हुए परमात्मा के द्वारा दिया गया भारत माता है जगत जननी का खोया सम्मान पाने के लिए फिर से अपनी शक्तियों को जागृत कर संसार का कल्याण करना होगा।

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स

www.bkvarta.com